तीन जिल्दें तीनों पर, और लिखी हकीकत ।
रूक्का दलेल खान पर, दई हकीकत कयामत ॥१४४॥

हिदायत उल्ला आदि अधिकारियों के पास तीन जिल्दों में पत्र भेजे गए । जिसमें ईमाम मेंहदी साहिब के प्रगट होने और कयामत के जाहिर होने की सब बातें लिखी थी । एक पत्र दिलेल खां पठान को भी इसी विषय में भेजा गया ।

वीरजी पठवायो औरंगाबाद, सेखबदल लाल खान ।
इनें आकोट से बिदा किए, क्योंए होए पहिचान ॥१४५॥

श्री प्राणनाथ जी ने आकोट से वीर जी, शेखबदल और लाल खां को औरंगाबाद भेजा । किसी प्रकार इन मुसलमानों को कुरान की हकीकत की पहचान हो जाए ।

महामत कहें ऐ मोमिनों, ए औरंगाबाद की बीतक ।
अब आकोट की कहों, जो बीतक है बुजरक ॥१४६॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! ये औरंगाबाद की बीतक आपसे कही है । अब आकोट की जो महत्वपूर्ण बीतक है वो आपसे कहते हैं ।

प्रकरण ५३, चौपाई २९३०

शुक्राना - आकोट

अब तुम सुनियो साथ जी, सुक्राना करो याद ।
एक बातून तुम ऊपर, दिखाऊं तुमें बुनियाद ॥१॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं ए सुन्दरसाथ जी ! श्री राज जी महाराज की अपार-अपार जो मेहर तुम पर हुई है । उसको हमेशा याद करो । मेहर दो प्रकार की होती है - एक बातूनी और दूसरी जाहेरी । एक तो जो तुम्हारे ऊपर बातूनी मेहर हुई है, उसकी हकीकत बताता हूं । तुम्हारे संसार में उतरने से पहले ही श्री राज जी महाराज ने तुम्हारे संसार में आने से लेकर जाने तक कुरान और पुराण में सब निशानियां लिखवा दी थी ।

इन जिमी में आज लों, वेद कतेबों करी खोज ।
पर ठौर अक्षर न पाइया, त्रिगुन थके खोज ले बोझ ॥२॥

इस संसार में आज दिन तक जितने भी वेद कतेब आदि धर्म-ग्रन्थ हैं, उनके द्वारा सब लोगों ने पारब्रह्म अक्षरातीत और उसके परमधाम को खोजने का प्रयास किया मगर किसी ने भी अक्षर ब्रह्म के धाम तक को नही पाया । तीनों गुणों के देवता ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि, जो इन ग्रन्थों के लिखने वाले हैं, वे भी खोज-खोज कर थक गए ।

Nijanand App

और जो कोई खोजत, ले तिनके सुकन ।
जिनों नेत नेत पुकारिया, खबर नही त्रिगुन ॥३॥

और संसार के जितने भी ऋषि-मुनि, ज्ञानी, तपस्वी, योगी, धर्माचार्य आदियों ने वेद-शास्त्र के आधार पर ही परमात्मा की खोज की । वेदों में भी जिसके बारे में स्पष्ट लिखा कि परमात्मा यहां नही है, यहां नही है । ब्रह्मा, विष्णु, महेश को भी अक्षरातीत पारब्रह्म का पता नही चला ।

जो तिन की खोज से, मकसूद न होवे इन ।
सो सारे जाहिर कर, बैठाए इत मोमिन ॥४॥

इन ग्रन्थों के द्वारा दिए ज्ञान से पारब्रह्म की खोज से किसी को पारब्रह्म की प्राप्ति नही हुई । केवल मोमिनों के वास्ते ही आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी ने इन ग्रन्थों में लिखे क्षर, अक्षर, अक्षरातीत को जुदा करके बता दिया ।

अक्षर अक्षरातीत की, काहू नही पहिचान ।
सो कर पकर बताइया, दृढ़ कर दिया ईमान ॥५॥

सारे संसार को अक्षर और अक्षरातीत तथा उनके धाम का पता नही था । स्वयं श्री जी ने मूल निसबत होने के कारण से मोमिनों को माया से निकाल कर अपने चरणों में लेकर अक्षर और अक्षरातीत के धाम और स्वरूप की पहचान कराई । पहचान करा के ईमान पक्का कर दिया ।

दे गुन पख इन्द्री साहिदी, और सास्त्रों के वचन ।
और भाखा सब साधों की, सिफत करे मोमिन ॥६॥

मोमनों की गुण, अंग, इन्द्रियों को माया से हटा कर श्री राज जी महाराज के चरणों में लगा कर पक्का यकीन करा दिया । इसलिए शास्त्रों के वचन और सब सन्तों के ग्रन्थों में भी ब्रह्मसृष्टि की प्रशंसा (महिमा) गाई गई है ।

जो नहीं अक्षर जागृत में, धाम अंदर की सुध ।
सो सैयों को दई, जागृत हृदय बुध ॥७॥

अक्षर ब्रह्म, जिसके हुकम से संसार बनता है वह भी परमधाम के रंगमोहल के अन्दर होने वाली इश्क की लीला को नही जानता । उन लीलाओं को समझाने के लिए आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी ने जाग्रत बुद्धि के तारतम ज्ञान से सब मोमिनों को पहचान करा दी ।

Nijanand App

तिन बुध संग तारतम, सब कही हकीकत धाम ।
सो वतन सैयन का, जाहिर किया इस ठाम ॥८॥

उस जागृत बुद्ध के साथ-साथ तारतम के ज्ञान के स्वरूप की शक्ति से आप श्री जी ने परमधाम की सब हकीकत की मोमिनों को पहचान करा दी । मोमिनों के मूल घर परमधाम का साक्षात् अनुभव कराने वाला वर्णन (पच्चीस पक्ष की चितवनी) इस संसार के शब्दों में कर दिया ।

धाम अन्दर की बीतक, संग मूल सरूप बिहार ।
जो बात मूल सरूप के चित्त में, ताको सैयां खबरदार ॥९॥

ब्रह्मसृष्टि को रंग मोहल के अंदर मूल मिलावे में बैठकर इश्क रब्द की बातें बता दी । मूल स्वरूप श्री राजजी महाराज के चित्त में सदा अपनी ब्रह्मसृष्टियों को लाड प्यार देने की जो हकीकत है, वह भी बता कर उन्हें सावचेत कर दिया ।

जो अक्षर पावे नही, सो त्रिगुन पास क्यों होए ।
सो सुपन के जीवों को, सब ठौर बताया सोए ॥१०॥

पारब्रह्म की जिस लीला का ज्ञान अक्षर ब्रह्म को नही है, उसकी जानकारी ब्रह्मा, विष्णु, महेश को कैसे हो सकती है । आप श्री प्राणनाथ जी ने त्रैगुण से उत्पन्न जीवों के लिए सब आसान करके सुलभ कर दिया ।

ए मेहर मोमिनों पर, सबों पाई इनों सोहोबत ।
एह समें हकें किया, फरदा रोज कयामत ॥११॥

ये मेहर श्री राजजी महाराज ने केवल मोमिनों के लिए ही की है । अब मोमिनों की सोहबत से ही वह ज्ञान संसार के जीवों को प्राप्त हुआ है । इसी समय को कुरान में फरदा रोज कयामत करके लिखा है ।

इन भांत मेहर मोमिनों पर, कै अलेखे अपार ।
सो इन जुबां केती कहों, दिए बातून खोल के द्वार ॥१२॥

इस प्रकार मोमिनों पर श्री राजजी महाराज की अपार मेहर उतरी है । इस झूठी जुबां से उसका वर्णन नही हो सकता । इस संसार के सब ग्रन्थों के छिपे भेदों के अनुसार जाहिर करके मोमिनों के लिए परमधाम का दरवाजा खोल दिया ।

अग्यारे सौ साल का, लिख भेजा अल्ला कलाम ।
खोज करी सब सृष्ट नें, पाया न काहू निजधाम ॥१३॥

मोमिनों के संसार में उतरने से ग्यारह सौ साल पहले ही श्री राजजी महाराज ने कुरान में मोमिनों की कुल हकीकत लिखकर भेज दी जिसे सारे संसार ने पढ़-पढ़ कर बहुत खोज की पर कुरान में लिखे इशारों को कोई भी समझ नही सका ।

Nijanand App

सो आमर इसलाम की, सब हाथ दई मोमिन ।
खुली हकीकत मारफत, सब तले इनके इजन ॥१४॥

उस ज्ञान को खोलने का पूर्ण अधिकार, जो कुरान में लिखा था, आप श्री राजजी महाराज ने मोमिनों को दिया है । अब इन मोमिनों के द्वारा ही पारब्रह्म की हकीकत और मारफत के वह सब भेद खुल रहे हैं । इसी लिए सारा संसार उसे सुन-२ कर इनके चरणों में आ रहा है ।

जो आए इनकें हुकम तले, सो आए बीच इसलाम ।
सो सब उसका हो चुका, जिन खुले रब्बानी कलाम ॥१५॥

जो इस हकीकत और मारफत के ज्ञान पर ईमान लेकर मोमिनों के चरणों में आ गए, वही दीने इसलाम निजानन्द सम्प्रदाय का अनुयायी है । इन्होंने ही कुरान के छिपे रहस्यों को समझा तो कुल ग्रन्थों की पूंजी के मालिक मोमिन हो गए ।

एह तो बातून की, मेहर है ऊपर रूहन ।
और ऊपर मेहर वजूद के, सो जाहिर देखो मोमिन ॥१६॥

यह मेहर तो बातूनी है जो श्री राजजी महाराज ने अपने मोमिनों पर की है और समय-समय पर जो अपनी ब्रह्मसृष्टि के झूठे तनों पर श्री राजजी महाराज ने मेहर की । ऐ मोमिनों ! इसे जाहिर रूप से अनुभव करो।

पहले मूल बृज मिने, तित पड़े बिघन ।
सो सारे दफे हुए, हुए संसार में धन धन ॥१७॥

सबसे पहले ब्रह्मसृष्टि गोपियों के रूप में प्रगट हुई । वहां जितने संकट आए, श्री राज जी महाराज ने मेहर करके दूर किए । इसलिए राज जी महाराज की अंगना होने के नाते से संसार में धन-धन हुई ।

आज लों ब्रह्मांड में, सब बन्दे बृज रेंन ।
पावत नही ब्रह्मादिक, तित थे मोमिन बीच चेंन ॥१८॥

आज दिन तक इस संसार में गोपियों की चरण रज की ही चाहना सब रखते हैं । त्रिदेवा आदि भी उस ब्रज की चरण-धूलि को चाहते हैं परन्तु उन्हें भी नहीं मिली । उस ब्रज में ब्रह्मसृष्टि श्री राज जी महाराज के चरणों में आनन्द में रही थी ।

फेर आए बीच रास के, कहया दूसरा दिन ।
ना ताकत सुनने त्रिगुन को, तहां खेले मोमिन ॥१९॥

पहले दिन की ब्रज की लीला करने के बाद दूसरे दिन की रास की अखण्ड लीला जो मोमिनों ने अपने धनी के साथ की, उसको कहने या सुनने की ताकत त्रिदेवा को भी नहीं है क्यों कि वह लीला योगमाया के ब्रह्मांड में हुई थी ।

Nijanand App

सब कोई वांछे तिनको, पावे नही खबर ।
अटकले अखण्ड की, पावे न कोई फजर ॥२०॥

सारे संसार के लोग उस अखण्ड ब्रज व रास की लीला की चाह रखते हैं पर कोई पा नहीं सका । अनुमान या अपनी अटकल के ज्ञान से कल्पना करके अखण्ड लीला के आनन्द का सुख कोई नहीं पा सकता ।

रास रात ढूंढन की, अटकल करें अनेक ।
हाथ कछू न आवही, बिन मोमिन न पावे एक ॥२१॥

रास लीला की अखण्ड रात्रि कौन सी है, बड़े बड़े विद्वानों ने अनुमान द्वारा ढूंढना चाहा पर किसी के हाथ कुछ नहीं आया । मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) के बिना इस अखण्ड सुख को समझने की शक्ति किसी में नहीं है ।

रास लीला खेल के, आए बरारब स्याम ।
सो वास्ते मोमिन के, पूरे किए मनोरथ काम ॥२२॥

रास लीला में श्री कृष्ण जी के तन में जो स्वरूप राज जी के आवेश से लीला कर रहा था । वही स्वरूप अरब में महम्मद साहब के रूप में प्रगट हुए और ११०० साल पहले कुरान के रूप में मोमिनों की मनोकामना पूर्ण करने के लिए ब्रह्मवाणी (कुरान) लेकर आए ।

एह दिन तीसरा, कहया माजजे देखाए अनेक ।
अग्यारे सै बरस आगे कहया, कोई अरथ न पावे हरफ एक ॥२३॥

महम्मद साहब के रूप में इस लीला को तीसरे दिन की लीला कहा है । उन्होनें अल्लाह तआला की वाणी कुरान को सत्य सिद्ध करने के लिए कई चमत्कार कर दिखाए । ११०० साल पहले मोमिनों के इस संसार में आने की गवाही का वर्णन किया । कुरान के एक शब्द को भी कोई समझ नहीं सका ।

दिन चौथे मिने, धरा रसूलें कदम ।
तिन पांउ सूझ ना किया, जागें न कोई आतम ॥२४॥

चौथे दिन श्यामा महारानी, ईसा रूह अल्लाह, निजानन्द स्वामी, श्री देवचन्द्रजी के तन में प्रगट हुए। उनके द्वारा ब्रह्मसृष्टि को परमधाम की वाणी का ज्ञान (कुलजम सरूप की वाणी का ज्ञान) प्राप्त नहीं हुआ। तारतम के द्वारा ३१३ आत्माएं निजानन्द सम्प्रदाय में आई पर वाणी के बिना माया में दोबारा भूल गई।

प्रमाण : तीन लीला माया मिने, हम प्रेमें विलसी जेह ।
ए लीला चौथी विलसते, अति अधिक जानी एह ॥

क० हि० प्र० २३ चौ० ७४

अर्थात् देवचन्द्र जी के तन से स्वपने की लीला हुई और श्री जी के द्वारा परमधाम की लीला हुई ।

Nijanand App

ए हकीकत रूहअल्ला की, सौ बरस रखी छिपाए ।
धरा कदम दूसरा, दई रूहों को पोहोंचाए ॥२५॥

आनन्द अंग श्यामा महारानी (रूह अल्लाह) के तारतम ज्ञान की जानकारी १०० वर्ष तक अज्ञात (छिपी) रही । जब पांचवें दिन दूसरे जामे (तन) में मेहराज ठाकुर जी के तन में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में आए तब परमधाम की वाणी (कुलजम सरूप) ब्रह्मसृष्टि को पहुंचा दी गई ।

एह दिन पांचमा, इमाम की इमामत ।
सो दरवाजा जाहिर किया, फरदा रोज कयामत ॥२६॥

पांचवें दिन की लीला हकी स्वरूप श्री प्राणनाथ, ईमाम मेंहदी साहिब की लीला है । आप श्री प्राणनाथ जी ने ईमाम मेंहदी साहिब का दुनियां में आना और कयामत का जाहिर होना, जिसको कुरान में फरदा रोज कयामत कहा है, इसके भेद समझाने के लिए कुलजम स्वरूप की वाणी से सब दरवाजे खोल दिए।

ए चीन्हों सूरत रसूल की, वास्ते काम किए मोमिन ।
कै लोकों दिखाए माजजे, तोहे न पतीजे मन ॥२७॥

ये मुहम्मद साहब की तीन सूरतों की पहचान कराई है । ऐ सुन्दरसाथ जी ! तुम इनको पहचानो । मोमिनों के वास्ते ही इन्होंने अनेकों कार्य किए । दुनियां वालों को अनेकों चमत्कार भी देखने को मिले तो भी किसी को उन पर यकीन नही आया ।

अब छठा दिन जुम्मे का, तहां मोमिन जमा भए ।
ए सब होत तिन वास्ते, सुकन जबराईलें कहे ॥२८॥

छठे दिन का समय, जिसको कुरान में जुम्मे का दिन कहा है, जिसमें मोमिन जाग्रत होकर एक जगह इकट्ठे होंगे । श्री राज जी महाराज की जाग्रत बुध जबराईल द्वारा ग्रन्थों में और कही हुई सब बातों को सिद्ध करने के लिए यह सब हो रहा है ।

ए माजजे मोमिन देखहीं, सब पांचों दिन के ।
होय वारस बेटे बाप के, सब मता आया इन पे ॥२९॥

कुरान के अनुसार पांच दिनों की चमत्कार पूर्ण लीलाओं को मोमिन देखेंगे । जिस प्रकार पिता की सम्पत्ति का मालिक पुत्र होता है; उसी प्रकार कुलजम सरूप की वाणी पांचवें दिन की लीला के बाद ब्रह्मसृष्टियों की सम्पत्ति है । वही इसके मालिक हैं ।

सो जाहिर करत हैं, करनें को पहिचान ।
पहिले मोमिन ईमान ल्याए, पीछे सब खलक सुने कान॥३०॥

सुन्दरसाथ को जाग्रत करने के लिए श्री प्राणनाथ जी यह कुलजम स्वरूप की वाणी लाये हैं । इस पर पहले मोमिन यकीन लायेंगे । बाद में सारे संसार के लोग भी यकीन लायेंगे ।

Nijanand App

महम्मद के माजजे, सो जाने इसलाम ।
बातून मोमिन जानहीं, और जाहिर खलक आम ॥३१॥

महंमद साहब के समय जो चमत्कार हुए, उनके बातूनी मायने दीने इसलाम निजानन्द सम्प्रदाय के सुन्दरसाथ ही जानते हैं और जाहेरी दुनियां वाले जाहेरी रूप से ही देख कर श्री जी की पहचान करेंगे।

कई काफरों गुलबा किया, मानें नहीं पैगाम ।
तिन सबों के सिर भान के, ल्याया जाहिर इसलाम ।३२॥

कई शरीयत के अभिमानी कुरान से मुनकरी करने वाले लोगों ने मोमिनों पर अनेकों कष्ट ढाये और मोमिनों के द्वारा ले जाए गए पैगाम को ठुकराया । उन सब के सिर तोड़ कर अभिमान को नष्ट कर मोमिनों ने निजानन्द सम्प्रदाय दीने इसलाम को जाहिर किया ।

जो मिल्या जिन भांत सों, तिन सों मिले तिन विध ।
अन्दर मेहर जाहेर कहर, ए भई महम्मद की सिध ॥३३॥

आप विजयाभिनन्द बुद्धनिष्कलंक अवतार आखरूल जमां ईमाम मेहंदी साहब श्री प्राणनाथ जी को जो जैसी भावना लेकर मिला वह उसे उसी प्रकार मिले । जो लोग उन पर ईमान नही लाये उनको भी पारब्रह्म की पहचान कराने के लिए बाहरी रूप से भले दंड दिया पर अंदर उन पर कृपादृष्टि ही थी कि किसी तरह से यह पारब्रह्म को पहचान जाएं । ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी की महंमद साहब के रूप में यही शोभा है ।

प्रमाण : जिन जैसा चीन्हा महंमद को, तासों तैसी रखी चिन्हार ।
यों बदला पाए देखिए, या जीत या हार ॥
(मारफत सागर, प्र०१२ चौ० ३५)

जाको दिल जिन भांत को, तासों मिले तिन बिध ।
मन चाहया सरूप होए के, कारज किए सब सिध ॥
(खुलासा, प्र० १३ चौ० ९४)

नबी की नबूबत, बैठे जानी ना किन ।
तो ए लड़ने को सामें खड़े, आकीन न आया जिन ॥३४॥

महंमद साहिब की हकी सूरत ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी के इस स्वरूप को जिन्होंने नही पहचाना, वही लोग पैगाम से मुनकरी करके लड़ने के लिए सामने खड़े हो गए ।

Nijanand App

जब बोए आई इसलाम की, वोही आए बीच दीन ।
तिनकी नसल जो बढ़ी, ताए बढ़ता गया आकीन ॥३५॥

जिन लोगों को दीने इसलाम निजानंद सम्प्रदाय की हकीकत की पहचान हो गई वही श्री प्राणनाथ जी के चरणों में समर्पित हुए । ऐसे पहचान कर ईमान रखने वाले सुन्दर साथ के द्वारा ही जो प्रचार-प्रसार से निजानंद सम्प्रदाय का फैलाव हुआ तो लोगों का श्री प्राणनाथ जी के प्रति ईमान बढ़ता गया ।

बढ़ते बढ़ते बढ़या, आम आए बीच दीन ।
तेही महम्मद के वास्ते, लड़े काफरों से ले आकीन ॥३६॥

इस प्रकार श्री प्राणनाथ जी के द्वारा चलाए हुए निजानंद सम्प्रदाय पर लोगों का विश्वास बढ़ता गया और सुन्दर साथ(अनुयायी)होते गए और उन्हीं सुन्दरसाथ ने ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी को महंमद साहिब की हकी सूरत में पहचाना और कुरान के पैगाम से मुनकरी करने वाले काफिरों (जिन मुसलमानों ने पैगाम फेरा) से लड़ाई करते रहे ।

अग्यारे सैं साल लों, बढ़ा दीन इसलाम ।
किया था वायदा तिन सों, हक फेर आवेंगे तिन ठाम ॥३७॥

महंमद साहब के संसार से चले जाने के बाद ११०० वर्ष तक इसलाम धर्म की वृद्धि होती रही । उन्हीं रसूल साहब ने वायदा किया था कि अल्लाह ताला (पारब्रह्म) जब ग्यारहवीं सदी में अपनी उम्मत (मोमिनों) के वास्ते आयेंगे तो मैं भी उनके साथ आऊंगा ।

मेरी तीन सूरत को, पेहेचानियो अब तुम ।
बसरी मलकी हकी, तुमें दिखावें हम ॥३८॥

उन्होंने यह भी कहा था कि मेरी तीन सूरतें संसार में प्रगट होंगी । उन्हें तुम पहचान लेना । कुरान के अनुसार महंमद साहब की बसरी (शरीयत का ज्ञान देने वाले), मलकी (हकीकत का तारतम ज्ञान देने वाले) और हकी (पारब्रह्म से मिलाकर मारफत में लाने वाले) तीनों स्वरूपों को अब हम आपको साक्षात् दिखाते हैं ।

ए पोहोंचे नजदीक खुदाए के, तित काहू की ना गम ।
न फिरस्ते नजीकी न मुरसद, ल्याइयो ईमान तुम ॥३९॥

ये तीनों स्वरूप अखंड परमधाम के अंदर मूल मिलावे में श्री राजजी महाराज के चरणों में पहुंचे । जहां बड़े-बड़े धर्माचार्य भी नही पहुंच पाते । इसलिए ऐसे पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत जिन्होंने इन तीनों स्वरूपों में लीला की है । उनके स्वरूप को पहचान कर इन तीनों स्वरूपों पर ईमान लाना ।

Nijanand App

गिरोह रब्बानी उतरे, हम आवें तिन वास्ते ।
तुम उम्मेदवार तिनके, तुम पेहेचानियो मुझे ॥४०॥

रसूल साहब ने कहा कि पूर्ण ब्रह्म की रूहें परमधाम से संसार में उतरेगी । हम उनके लिए संसार में आयेंगे । आप लोग उन मोमिनों के दर्शनों की आशा रखना और उनके संग मेरी पहचान कर लेना ।

ए कलाम रब्बानी उतरे, सो वास्ते मोमिन ।
तिन कौल कोई न ले सके, बिना मेरे दिल रोसन ॥४१॥

ये अल्लाह ताला की वाणी कुरान के रूप में ब्रह्मसृष्टियों के लिए संसार में आई । इसलिए कुरान की इन बातों की हकीकत को मेरे स्वरूप की पहचान किए बिना कोई भी नही पा सकेगा ।

इन बात से जानियो, एही मोमिन सके पहिचान ।
जिनकी असल अरस में, हकें दिया ईमान ॥४२॥

इस बात से समझ लीजिए कि मोमिन ही श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप को पहचान सकेंगे । जिनकी परआतम परमधाम में मूल मिलावे में बैठी है । श्री राजजी महाराज ने उनको ही अपने स्वरूप की पहचान का ईमान बख्शा है।

और कोई न समझे, पहिले न आवे ईमान ।
बिंना अंकूर क्या करें, आवे नही पहिचान ॥४३॥

कुरान के इन छिपे रहस्यों अर्थात् ईमाम मेंहदी साहिब के प्रगट होने तथा कयामत के जाहिर होने के निशानों पर मोमिनों के बिना और कोई ईमान नही लायेगा । परमधाम के अंकूर के बिना जीव कर भी क्या सकते हैं । उन्हें कुरान के ज्ञान पर विश्वास ही नही होगा ।

हकीकत मारफत के, खोल दिए दरबार ।
देखत अचरज पावहीं, पोहोंचे न परवरदिगार ॥४४॥

कुरान में लिखे हकीकत और मारफत के रहस्यों को खोल कर श्री जी ने स्पष्ट किया । लोग सब ग्रन्थों के छिपे भेदों के रहस्य को श्री जी के मुखारबिन्द से खुलते देखकर हैरान तो होते हैं पर श्री जी के स्वरूप की पहचान के बिना अखंड परमधाम और श्री राजजी महाराज को नही पा सकेंगे ।

सातों निसान कयामत के, लिखे बीच बातून ।
मोमिन देखें जाहिर, हुए जिनके दिल रोसन ॥४५॥

कयामत के जाहिर होने के कुरान में सात बड़े-बड़े निशान बातूनी इशारों में लिखे हैं । इन रहस्यों को समझकर जाहिरी रूप में घटनाओं को वही लोग देख रहे हैं जिनकी आत्माएं तारतम ज्ञान से जागृत हो चुकी हैं ।

Nijanand App

हजरत ईसा आइया, ल्याया किल्ली गंज कलाम ।
पहिचान भई मोमिन को, आए बीच इसलाम ॥४६॥

ईसा रूह अल्लाह, श्यामा महारानी देवचन्द्र जी के तन में सब धर्म-ग्रन्थों एवं कुरान के रहस्यों की हकीकत को जाहिर करने की कुंजी तारतम ज्ञान संसार में लाए । ब्रह्मसृष्टियां ही तारतम ज्ञान को सुनकर निजानन्द सम्प्रदाय में समर्पित हुई ।

आया दसमी सदी मिने, बातून हुई जाहिर ।
रहे बरस चौहत्तर, चीन्हे न कोई बाहिर ॥४७॥

निजानन्द स्वामी, श्यामा महारानी श्री देवचन्द्र जी के तन में मुहम्मद साहब के बाद १०वीं शताब्दी में प्रगट हुए । वह ७४ वर्ष संसार में रहे पर उनके असल स्वरूप की पहचान कोई न कर सका (बाईबिल में भी संकेत है कि ईसा रूह अल्लाह आएंगे उनके मुंह पर पर्दा होगा इसलिए कोई पहचान न सकेगा इसलिए हिन्दुओं के तन में आने के कारण कोई ईसाई या मुसलमान उन पर यकीन नहीं लाये) ।

कई माजजे तिन के, हुए बीच जिमीन ।
इलम लुदंनी ल्याइया, पड़ा न काहू चीन ॥४८॥

इस संसार में (नौतनपुरी में) उनके स्वरूप की शक्ति के द्वारा अनेकों चमत्कार (आड़िका लीलाएं) भी हुए । उन्होंने तारतम ज्ञान भी दिया तो भी उनकी पहचान कोई न कर सका ।

सोर किया दज्जाल नें, नाजल के बखत ।
एह मोकों मारेगा, बखत फरदा रोज कयामत ॥४९॥

जब श्यामा महारानी निजानन्द स्वामी परमधाम से अपनी आत्माओं को लेकर संसार में उतरे, उसी समय से दज्जाल स्वरूप मुनकर होने वाले विरोधी लोग इनसे संघर्ष करते रहे । बेईमान रूप दज्जाल को ये डर था कि कयामत के दिन ये मुझे मार डालेंगे । ये मुझे ही मारने के लिए संसार में आए हैं अर्थात् जिन लोगों के दिल में परमात्मा के प्रति विश्वास नहीं है, उनको विश्वास दिलाएंगे ।

पेहेना जामा दूसरा, आए बैठे बीच इमाम ।
तब दज्जाल ने जानिया, इनें मेरे मारनें का काम ॥५०॥

रूह अल्लाह श्यामा महारानी देवचन्द्र जी के तन को छोड़ कर दूसरे जामे मेहराज ठाकुर के तन में जब आए तो ईमाम मेंहदी के स्वरूप में मिल गए । तब दज्जाल ने समझ लिया कि विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार ईमाम मेंहदी साहिब के स्वरूप का उद्देश्य यही है कि वह मुझ अज्ञान स्वरूप दज्जाल को मार डालें और सारे संसार को पारब्रह्म के स्वरूप की पहचान करा दें ।

Nijanand App

तब इनके सामने, लड़ने हुआ तैयार ।
मोमिन मोसों छुड़ाए के, पोहोंचावे परवरदिगार ॥५१॥

तब दज्जाल अज्ञानी, ईर्ष्यालु, विरोधी, खुदा से मुनकरी करने वाले लोगों के मन में बैठ कर श्री जी के सामने लड़ने के लिए तैयार हुआ कि ये मोमिनों को, जिनको मैंने माया में उलझा रखा है, अपनी वाणी के ज्ञान से मेरे फंद से छुड़ाकर इन्हें पारब्रह्म के पास परमधाम में पहुंचा रहे हैं ।

मेरा जोरा इन से, चलत नही लगार ।
तिस वास्ते छोड़ हों, चार फौज करों तैयार ॥५२॥

मेरा बल इनके शक्तिशाली स्वरूप के सामने कुछ भी नही चलता और मैं इनका कुछ भी नही कर सकता । इसलिए मैं इनकी वाणी को असफल बनाने के लिए और मोमिनों को माया में उलझाए रखने के लिए चार फौजें तैयार करूंगा ।

एक बेईमान औरत, और बाजे बजावन हार ।
तीसरे पढ़नें वाले इलम के, चौथे जादूगर होसियार ॥५३॥

दज्जाल की इस फौज में पहली बेईमान औरत अर्थात् चरित्रहीन औरतें मोमिनों को ईमान से गिराएंगी तथा वह औरतें जो सारी-सारी रात अपने नाच और गानों से लोगों को लुभाकर पैसा लेती हैं और दूसरे अनेकों प्रकार के बाजे बजाने वाले जैसे रेडियो, टू इन वन, टीवी और इसके २४ घंटे के धारावाहिक प्रोग्राम। तीसरे ज्ञानी लोग जो अपने झूठे ग्रन्थों की रचना कर मधुर वाक्य और बोलने की चतुराई रखने वाले तथा बनावटी हास्य रस की कथाएं सुना-सुना कर लोगों को ठगने वाले । चौथा जादूगर, जो अपनी चमत्कारी लीलाओं से दुनियां के मनों को भ्रमित कर देने की शक्ति रखते हैं । ये चारों माया दज्जाल की शक्तियां अवसर पाकर पारब्रह्म की राह पर चलने वाले मोमिनों को उलझा कर उनको अपने रास्ते से गिरा देते हैं (प्यारे सुंदरसाथ जी । इस चौपाई को पढ़ कर सदा ऊपर लिखी वस्तुओं से बचकर रहना नही तो इन नाश करने वाली वस्तुओं के बदले धनी को गंवा बैठोगे) ।

जहां कहूं पावे मोमिन, खैंचे अपनी तरफ ।
जिनमें ईमान असल का, सो सुने न एक हरफ ॥५४॥

जहां कहीं भी ये शक्तियां जिन लोगों के दिलों में बैठी होती हैं, वही लोग मोमिनों के मित्रों के रूप बन कर अपनी तरफ खैंचकर उलझा देते हैं किन्तु जिन मोमिनों में श्री प्राणनाथ जी व उनकी वाणी के प्रति पूर्ण विश्वास होता है, वह सर्वदा इन की छाया से भी दूर रहते हैं और उनके एक शब्द को भी नही सुनते ।

Nijanand App

लगा सूर फूंकने, असराफील करना ए ।
सन एक हजार नब्बे, सुन सैंया दौड़ के आए ॥५५॥

असराफील फरिश्ता परमधाम की वाणी की गर्जना को प्राणनाथ जी के अंदर बैठ कर नरसिंहा फूंक रहा है। (ही० १०९०) सम्वत् १७३५ (१६७८ ई) में धर्म के नाम पर फैली थोथी मान्यताओं एवं असत्य के रूप में बैठे बड़े-बड़े आचार्य संत, महात्मा, मुल्ला, काजी जो पहाड़ जैसे बने बैठे थे, उनको अपनी परमधाम की वाणी की गर्जना से उड़ा दिया। तब मोमिन इस आवाज को अर्थात् वाणी को सुनकर श्री जी के चरणों में आने लगे।

काफरों के दिल बैठ के, बड़ा जो किया सोर ।
मोमिन उतरे अरस से, ताको चित्त न हुआ मरोर ॥५६॥

उधर दज्जाल स्वरूप बेईमान लोग जो परमात्मा की वाणी से सदैव मुनकर होते हैं, उनके दिलों में बैठ कर श्री जी की निंदा कर खूब शोर मचाते हैं पर मोमिन ब्रह्मसृष्टियां जो परमधाम से आई हैं, वे उनको अपने धनी के ईमान से नही गिरा सके।

खेस कबीला कुटुम्ब, सब दज्जाल को लसगर ।
तिन में से छुड़ाए के, पहुंचाए अपने घर ॥५७॥

सब रिश्तेदार, सगे-सम्बन्धी, बिरादरी वाले लोग अपने हित के लिए ही परमात्मा से विमुख करते हैं। ये सब दज्जाल के रूप हैं। ऐसे दज्जाल के फंद में जकड़ी ब्रह्मसृष्टियों को अपनी परमधाम की वाणी के बल के द्वारा वहां से छुड़ाकर अपनी पहचान कराकर परमधाम पहुंचाया।

निगहबानी जबराईलें, करी ऊपर रूहन ।
साफ रखे सबों अंगों, दिल रहे हमेसा रोसन ॥५८॥

श्री राजजी महाराज के आवेश स्वरूप जबराईल सदा ब्रह्मसृष्टियों की रक्षा करते हैं। वह उनके मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार आदि सभी अंगों को पवित्र रखता है और परमधाम की अखण्ड वाणी की ज्ञान की शक्ति से उनका दिल सदा जाग्रत रहता है।

जब याद करने फजर को, लगा पोहोंचावने पैगाम ।
तब दज्जाल ने चीन्हया, ए मारे मुझे इमाम ॥५९॥

जब ईमाम मेंहदी साहिब के भेजे १२ साथियों ने अपना फर्ज समझ कर ईमाम मेंहदी साहिब के प्रगट होने तथा कयामत के जाहेर होने का सन्देश बादशाह को जाकर सुनाया तब बेईमान स्वरूप दज्जाल, ईर्ष्यालु एवं खुदा के ज्ञान से मुनकरी करने वालें लोगों के मन में बैठ कर श्री जी को ईमाम मेंहदी के स्वरूप में पहचान लिया और समझ गया कि यह मुझे मारने के लिए ही संसार में आए हैं।

Nijanand App

तिन से लड़ने को, बांधी कम्मर जोर ।
तब पैगाम पोहोंचाईया, किया बड़ा सोर ॥६०॥

ऐसे लोगों से मोमिनों ने कमर कस कर दृढ़ निश्चय से और साहस से संघर्ष किया और ईमाम मेंहदी के प्रगट होने तथा कयामत के जाहेर होने का सन्देश बादशाह तक पहुंचाया । तब दज्जाल ने बादशाह के दरबारी बड़े-बड़े काजियों के तथा कोतवाल के दिल में बैठ कर मोमिनों की अनेक प्रकार से निंदा की और उन्हें अनेक कष्ट दिए ।

छुड़ावने ईमान को, करने लगा जुलम ।
पैठ अपने लसकर में, सक सुभे उठावे कुंम ॥६१॥

ईमाम मेंहदी साहिब के आने और कयामत के जाहेर होने के सन्देश को ले जाने वाले मोमिनों के दर्शनों से प्रभावित होकर बादशाह के दिल में विश्वास उत्पन्न हुआ किन्तु दज्जाल रूपी काजी, मुल्लाओं ने बादशाह के मन में भ्रान्ति बिठा कर शक पैदा कर दिया इसलिए वहां गए सुन्दरसाथ के साथ अनुचित व्यवहार किया ।

परवरदिगारें देखिया, लड़ाई के बखत ।
बुलाया बेतुल्लाह को, साहिदी बखत कयामत ॥६२॥

धाम के धनी ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी ने जब मोमिनों के ऊपर अत्याचार होते देखा तो मदीने (बैतुल्ला) की मस्जिद के दो मुनारे गिरे और वहां से आवाज आई "फकीरों की बरकत, खुदा पर ईमान, कुरान की शक्ति और नूरी झंडा, जबराईल यहां से उठा कर हिन्द में ईमाम मेंहदी के पास ले गया है ।" परन्तु शरा तौरा के ईमान रहित (मुनकर) काजियों ने कयामत की सबसे बड़ी इस निशानी को भी मानने से इन्कार कर दिया ।

सरियत के सिरे से, लिखे वसीयत नामें चार ।
तिनमें खबर कयामत की, पर काफर करे न विचार ॥६३॥

शरीयत के मूल स्थान मदीने से लिखे हुए चार वसीयत नामें आये । उनमें कयामत के जाहिर होने वाली निशानियों का स्पष्ट उल्लेख था पर अहंकार में डूबे इन निशानियों से मुनकर होने वाले काफिरों ने तनिक भी विचार नही किया ।

दज्जाल दिल सबन के, जोर बैठा दुसमन ।
जब पोहोंचे नामें वसीयत, धोए डारे सबन ॥६४॥

शैतान रूप अबलीस (नारद) इस संसार में सभी मनुष्यों के दिल में अपनी असीम शक्ति के साथ बैठा रहता है । जो सब की अक्ल पर अज्ञानता का पर्दा डाल कर अपने आधीन रखता है । वह चार वसीयत नामें मदीने से हिन्द के खलीफों शरीयत के काजियों के पास आये । उन पत्रों से भी मुनकरी करके बादशाह के ईमान को धोकर समाप्त कर दिया ।

Nijanand App

जब इमाम साहिब ने, पोहोंचाया पैगाम ।
तब दज्जाल कम्मर बांध के, लड़ा सामें इसलाम ॥६५॥

जब ईमाम मेंहदी स्वामी श्री प्राणनाथ जी ने अपने प्रगट होने तथा कयामत के जाहेर होने के निशानों का सन्देश बादशाह के पास पहुंचाया तो दज्जाल रूप अबलीस उसके दरबारी काजी मुल्लाओं के दिल में बैठ कर कमर कस कर हकीकी दीनें इसलाम निजानन्द सम्प्रदाय के सिद्धान्तों के विरूद्ध लड़ने के लिए तैयार हो गया ।

ऐसे समय में मेरते से, भेजे पैगम्बर ।
राठौर जसवंत सिंह सों, जाए कहो खबर ॥६६॥

उस समय आप श्री प्राणनाथ जी ने मेड़ते से ही गोवर्धन भाई को सन्देश देकर राजा जसवन्त सिंह के पास अटक पार भेजा कि उससे सत्संग करके हमें समाचार दो ।

जब पैगाम गया उन पे, सुन्या नाहीं कान ।
आजूज माजूज जो मारिया, बिना देखे ईमान ॥६७॥

श्री जी का समाचार जसवन्त सिंह के पास पहुंचा तो उसने उस पर ध्यान ही नही दिया । उसमें विश्वास की कमी देखी तो आजूज-माजूज ने काल के रूप में धर दबोचा । जिससे उसका स्वर्गवास हो गया ।

फेर आए दिल्ली सहर में, तब भई सामी सरियत ।
ए आया हमें उठावने, फरदा रोज कयामत ॥६८॥

जब श्री जी आप मेड़ते से दिल्ली पहुंचे तो शरीयत के कट्टर, कुरान की हकीकत के ज्ञान की जानकारी न रखने वाले मुसलमानों ने श्री जी का कड़ा विरोध किया । उन्होंने सोचा कि मोमिन फरदा रोज (कल का दिन जो ग्यारहवीं सदी होती है) को कयामत के जाहेर होने और ईमाम मेंहदी साहिब के आने का सन्देश बादशाह को देकर हम लोगों की हस्तियों को मिटाने आये हैं ।

बात न सुनें इनकी, अपनी सुहबत में ।
घेर लिया सुलतान को, बात न करें इन से ॥६९॥

दज्जाल, अबलीस रूपी उन मुसलमानों ने स्वामी जी के भेजे हुए संदेश की बात भी नही सुनी । फिर उन्होंने मिलकर बादशाह को अपने प्रभाव में लेकर उसके दिल में मोमिनो के प्रति शक पैदा कर दिया। इसलिए मोमिन बादशाह से चर्चा न कर सके ।

Nijanand App

जो पैगाम पोहोंचावहीं, तिनको डारे मार ।
ताबे सब दज्जाल के, हुए ना खबरदार ॥७०॥

बादशाह के पास श्री जी के द्वारा जो भी संदेश पत्रों के द्वारा भेजा जाता था, दज्जाल रूपी अबलीस दरबार के काजी लोग उसे फाड़ डालते थे । जिस कारण से बादशाह ईमाम मेंहदी साहिब के आने तथा कयामत के जाहिर होने की जानकारी न मिलने से सावचेत न हो सका ।

जब सुलतानें सुनी, दौड़ा तरफ ईमान ।
तब दज्जाल आड़े आए के, भान दई पहिचान ॥७१॥

जब बादशाह के पास मोमिन खुद संदेशा लेकर रूबरू हो गए तो बादशाह के दिल में कुरान की जानकारी होने के कारण से ईमान हो गया । वह निजानन्द सम्प्रदाय हकीकी दीने इस्लाम की बात मोमिनों से करने के लिए मान गया पर इन दरबारी अबलीस रूपी काजियों ने बादशाह को भ्रम में डाल कर ईमान को गिरा दिया इसलिए उसको पहचान न हो सकी ।

बसबसा करने लगा, ऊपर छाती के ।
छूटत तुम से साहिबी, क्यों मानत हो ऐ ॥७२॥

बादशाह के मन में भ्रान्ति बैठ जाने से अन्दर बैठे दज्जाल, अबलीस ने कहा कि अगर तूं ईमाम मेंहदी साहिब पर ईमान लाएगा तो तूं बादशाह नही रहेगा । तेरी इतनी शान मिट्टी में मिल जाएगी । तुम उनकी बातों को क्यों मान रहे हो ।

जो मेरे ताबे रहोगे, तो करो पातसाही तुम ।
जो ताबे होत इमाम के, तो तुम पर होवे जुलम ॥७३॥

बादशाह के अन्दर बैठे दज्जाल ने कहा कि यदि तुम मेरी बात को मानोगे तो तुम्हारी बादशाहत कायम रहेगी । ईमाम मेंहदी साहिब पर यकीन लाते ही तुम पर भी अत्याचार होंगे और तुम्हारे सब ठाट-बाट जाते रहेंगे ।

इत दज्जालें आए के, कहया मोमिन सें ।
मेरी पातसाही मिने, क्यों खड़ भड़ पाड़ी तुमें ॥७४॥

तब दज्जाल अबलीस ने बादशाह को अपने विचारों के अनुसार देखा कि इसका ईमान ईमाम मेंहदी साहिब से उठ गया है । तब काजी और मुल्लाओं के दिल में बैठ कर मोमिनों पर अत्याचार ढाते हुए कहा कि तुमने आकर मेरे बेईमानी और झूट के राज्य में ऐसा ज्ञान लाकर खड़ बड़ क्यों पहुंचा दी ।

Nijanand App

इहाँ से जाओ भाग के, ना कैद में करो तुम ।
मोमिन डरे तिन से, तावे हुए हक हुकम ॥७५॥

मोमिनों को चेतावनी देते हुए काजियों ने कहा कि तुम लोग यहां से भाग जाओ । नही तो हम आपको कैद कर देंगे । उनके बुरे विचारों को देखकर मोमिनों के दिल में कुछ डर आ गया पर वो वहां से पीछे नही हटे । अपने ईमान पर डट कर खड़े रहे । फिर श्री जी की आज्ञा अनुसार तब वहां के नियमानुसार बादशाह से जाने की इजाजत लेकर श्री जी के चरणों में पहुंचे ।

दज्जाल गुस्से होए के, पैगाम दिया भान ।
मोमिन कैद करके, फेरी दृष्ट सुलतान ॥७६॥

दज्जाल अबलीस मोमिनों पर गुस्से होकर बादशाह के दिल में बैठ गया और ईमाम मेंहदी के संदेशे को ठुकरा दिया और मोमिनों को नजरबन्द कर दिया । इधर मुल्ला काजियों ने औरंगजेब के मन में भ्रांति डालकर उसके ईमान को खत्म कर दिया ।

तब हक सुभाने देखिया, तखत से दिया उठाए ।
सहे कै कसाले मोमिन, पनाह में लिए बचाए ॥७७॥

पारब्रह्म अक्षरातीत श्री राज जी महाराज ने मोमिनों को अत्याचार सहते हुए देखकर औरंगजेब को सिंहासन से गिरा दिया । उसके साथ साथ ही मुगल साम्राज्य भी लगभग समाप्त हो गया । धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी ने अपनी मेहर से मोमिनों को सदा अपने चरणों में रखा ।

उदेयपुर आए पोहोंचे, दिया राणे को पैगाम ।
तित दज्जाल बैठा था, लड़ा साथ इमाम ॥७८॥

श्री जी के उदयपुर छोड़कर मंदसौर जाने से पहले औरंगजेब बादशाह की फौजों ने उदयपुर पर हमला किया तो स्वामी जी ने राणा के पास संदेशा भेजा कि तूं चिन्ता न कर हम इनसे कुरान से बातें करेंगे। वहां उनका भाई वैरिसाल बैठा था जो महापापी और दज्जाल का ही रूप था । उसने मोमिनों को लूटने का मन में विचार किया ।

पीछे सुलतान आए के, मार उठाया तिन ।
राखे पनाह में इनको, पोहोंचे मन्दसोर मोमिन ॥७९॥

श्री जी के उदयपुर छोड़कर मंदसौर जाते ही फौजों ने वहां के राणा को मारकर सिंहासन से हटा दिया। धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी मोमिनों को अपने आश्रय में रखकर मंदसौर पहुंचे ।

Nijanand App

तब हक सुभान सों, इनों करी अरज ।
सोर दज्जाल का देख के, वास्ते उम्मत के गरज ॥८०॥

उदयपुर के सुन्दरसाथ की दर्दनाक हालत को कृपाराम के द्वारा लाए हुए पत्र को सुनकर उसी समय श्री जी ने मूल मिलावे में ध्यान कर श्री राज जी महाराज से दर्द भरी आवाज़ से विनती की । सुनते ही श्री राज जी महाराज ने मोमिनों के दुःख दूर कर सुख आनन्द के लिए छः वाणी के प्रकरण (जो किरंतन में ३५-४० तक हैं) बख्शीश किए ।

अरज सुनी सुभान नें, जबराईल भेज दिया ।
दे दस सिपारे कुरान के, बोहोत खुसाल किया ॥८१॥

धाम के धनी ने श्री जी की प्रार्थना सुनकर तुरन्त अपने आवेश द्वारा श्री जी के मुख से कुरान के दस सिपारों की हकीकत वर्णन कराई । जिससे मोमिनों के सब संकट दूर हो गए ।

तहां से उज्जैन में, रहे केतेक दिन ।
वास्ते दीन इसलाम के, थे कोई कोई मोमिन ॥८२॥

मंदसौर से चलकर अब श्री प्राणनाथ जी उज्जैन आए । वहां कुछ दिन रह कर, जो परमधाम की आत्माएं वहां थी, उनको जगाकर तारतम दिया और उन्हें सुंदरसाथ में शामिल कर लिया ।

बुढ़ानपुर से होए के, पोहोंचे औरंगाबाद ।
बुलाए भावसिंह ने, हुआ कछुक इन्हें स्वाद ॥८३॥

बुढ़ानपुर से होते हुए श्री जी औरंगाबाद पहुंचे । भावसिंह ने आदर भाव से श्री जी को बुलाया । चर्चा सुनने के बाद उन्हें अखण्ड सुख आनन्द के रस की कुछ पहचान हुई ।

अपने अंकुर माफक, लाभ हुआ इने ।
लगा माजजा मांगने, वाका हुआ तिन सें ॥८४॥

भावसिंह ने अपने अंकूर माफक सुख लिया और श्री जी से उसने चमत्कारी लीला देखने को कहा तो इसी बीच उसका धाम गमन हो गया ।

इन समें इत दज्जाल नें, बड़ी करी तलास ।
राखे मोमिनों को पनाह में, भानी दज्जाल की आस ॥८५॥

भावसिंह की मृत्यु के बाद दज्जाल, अबलीस रूप फतेह मुहम्मद ने सिंहासन पर बैठते ही मोमिनों को खोज कर कैद में डालने के लिए दौड़ भाग की ।

Nijanand App

भेजा संदेसा खुदाए नें, बनी असराईल करो याद ।
तुम पीछे खबर फेरून की, सो मैं खबर दई बुनियाद ॥८६॥

धाम के धनी अक्षरातीत श्री राज जी महाराज ने उस समय आवेश के द्वारा किंरतन की वाणी उतरवाई। जिनमें मोमिन जो संकट देख रहे हैं । उन संकटों से बचाकर कैसे श्री राज जी महाराज अपनी पनाह में रखते हैं और शैतान रूप दज्जाल को कैसे फना कर देते हैं, कुरान की ये बातें याद कराई गई है । धाम के धनी श्री राजजी ने उसमें कहा है कि हम तुमको मूल बातें याद कराते हैं । असराईल की संतान का किस्सा देखो और याद करो और तुम्हें हैरून का साथ दिलवाकर तुम्हारे लिए फैरून की फौज को नील नदी (कुलजम) में नष्ट करके मूसा पैंगंवर की रक्षा की थी ।

दई तुमकों मैं कुलजम, इनको किया गरक ।
पढ़ो मेरे कलाम को, भागे सारी सक ॥८७॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि ए मेरे प्यारे सुन्दरसाथ जी ! उसी प्रकार इस संसार रूपी दज्जाल से बचाने के लिए मैंने तुम्हें ब्रह्मवाणी कुलजम सरूप दिया है और इस वाणी की शक्ति से ही सारे संसार के दज्जाल, अबलीस रूप लोगों के अभिमान को तोड़कर निर्मल करना है । मेरी इस कुलजम सरूप की वाणी को पढ़ोगे तो तुम्हारे सब संदेह मिट जाएंगे ।

महामत कहे ऐ मोमिनों, सुकराना ल्याओ बजाए ।
दज्जाल सों लड़ाई, और क्यों कर लिये बचाए ॥८८॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! श्री राजजी महाराज की मेहर का कोटि-कोटि आभार मानो कि उन्होंने किस प्रकार इस दुनियां में शरीयत और कर्मकाण्डी लोगों से, जो दज्जाल, अबलीस का रूप बन चुके थे, उनका संघर्ष कराया और तुम्हें अपनी अपार मेहर करके किस प्रकार बचा भी लिया ।

(प्रकरण ५४, चौपाई ३०१८)

लाल दास लसकर (दिल्ली काजियों के पास) को गए

उहां से आए बुढ़ानपुर, फेर पहुंचाया पैगाम ।
भई लड़ाई सरीयत सों, बीच दीन इसलाम ॥१॥

श्री प्राणनाथ जी उज्जैन से बुढ़ानपुर पहुंचे । वहां से फिर बादशाह के पास अपना संदेश भेजा । एक बार पुनः दीने-इसलाम निजानन्द सम्प्रदाय के सुन्दरसाथ का कट्टर शरीयत के कर्म काण्डी मुसलमानों के साथ संघर्ष छिड़ गया ।

Nijanand App